११. प्राचीन भारत और विश्व

११.१ भारत और पश्चिमी देश ।

११.२ भारत और एशिया महाद्वीप के अन्य देश

११.१ भारत और पश्चिमी देश

हड़प्पा संस्कृति के लोगों ने पश्चिमी देशों के साथ व्यापारिक संबंध प्रस्थापित किए थे । तभी से भारत का बाहरी विश्व से आर्थिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान प्रारंभ हुआ । बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार अफगानिस्तान और मध्य एशिया के अनेक देशों में हुआ था । ईरानी साम्राज्य के कालखंड में भी भारत का पश्चिमी विश्व से संपर्क बढ़ने लगा । उस समय के यूनानी इतिहासकारों की भारत के प्रति जिज्ञासा बढ़ गई थी । भारत के विषय में उन्होंने जो लेखन किया; उसके द्वारा पश्चिमी देशों को भारत का परिचय हुआ । कालांतर में जिस मार्ग से सिकंदर भारत आया; वे मार्ग भारत और पश्चिमी देशों के व्यापार के लिए खुल गए । कुषाणों के कार्यकाल में ग्रीक मूर्तिकला के प्रभाव से भारत में एक नई कलाशैली का उदय हुआ । उसे गांधार शैली कहते हैं । गांधार शैली में मुख्य रूप से गौतम बुद्ध की मूर्तियाँ गढ़ी गईं । ये मूर्तियाँ प्रमुखत: अफगानिस्तान के गांधार प्रदेश में पाई गईं । अत: इस शैली को 'गांधार शैली' कहते हैं । इस शैली की मूर्तियों के चेहरों के आकार-प्रकार यूनानी चेहरों से मिलते-जुलते हैं । भारत में प्रारंभिक सिक्के भी यूनानी सिक्कों के आधार पर ढाले गए थे ।

पेरिस के संग्रहायल में गौतमबुद्ध की प्रतिमा – गांधार शैली

ई. स. पहली-दूसरी शताब्दी के कालखंड में

अफगानिस्तान के हड्डा में स्तूप पर गांधार शैली का शिल्प । यूनानी लोगों की वेशभूषा, एंफोरा (एक प्रकार का कुंभ) और वाद्य

भारत और रोम के बीच का व्यापार समृद्ध हुआ था । इस व्यापार में दक्षिण भारत के बंदरगाहों का बहुत बड़ा योगदान था । महाराष्ट्र के कोल्हापुर में हुए उत्खनन में कांस्य धातु से बनी कुछ वस्तुएँ पाई गईं । वे वस्तुएँ रोमन बनावट की हैं। तमिलनाडु के अरिकामेडु नामक स्थान पर हुए उत्खनन में भी रोमन

अरिकामेडु में पाया गया रोमन सम्राट ऑगस्टस का सोने का सिक्का

बनावट की अनेक वस्तुएँ पाई गईं । ये दोनों स्थान भारत और रोम के बीच महत्त्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र थे । तत्कालीन साहित्य में ऐसे अनेक व्यापारिक

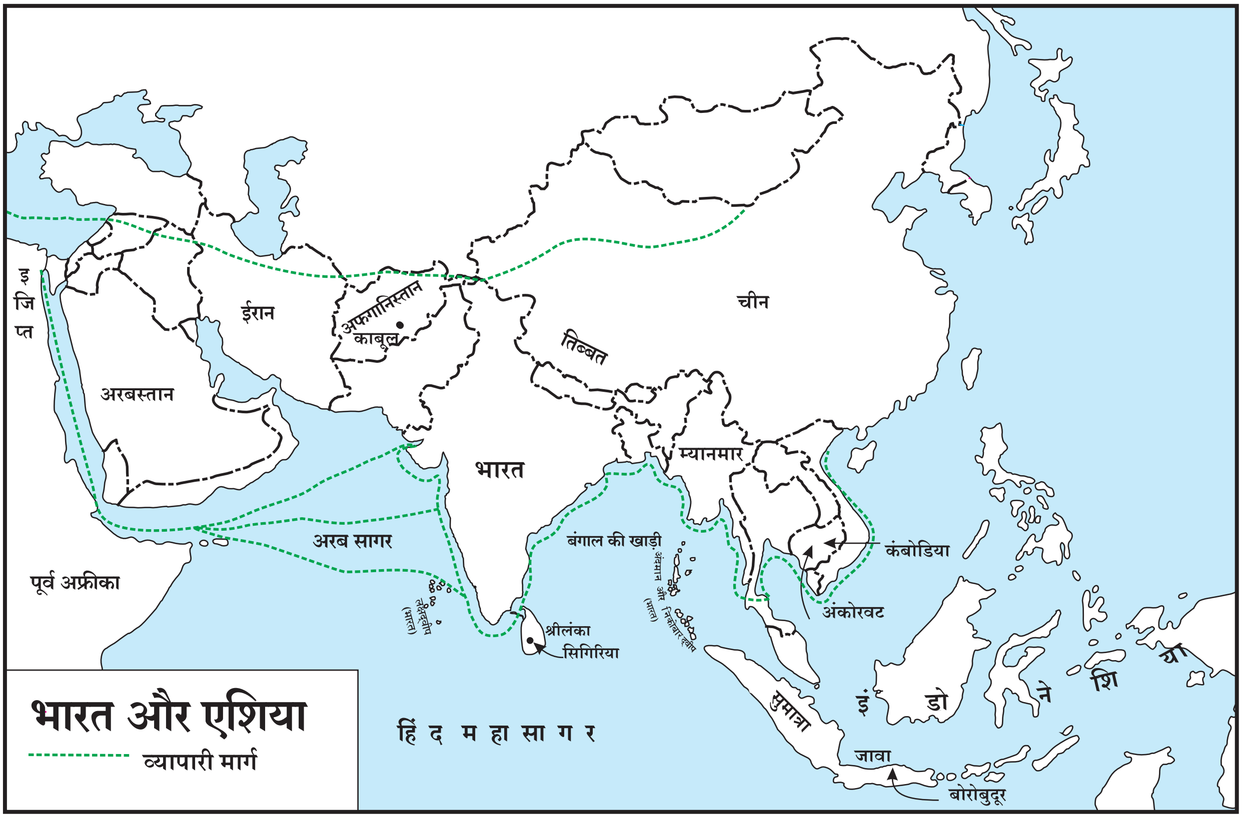

केंद्रों का उल्लेख प्राप्त होता है । इस व्यापार में इजिप्त के अलेक्जांड्रिया नामक बंदरगाह का बहुत बड़ा महत्त्व था । अरब व्यापारी भारतीय माल को अलेक्जांड्रिया तक ले जाते थे । वहाँ से वह माल यूरोप के देशों में भेजा जाता था । अरब लोगों ने भारतीय वस्तुओं के साथ भारतीय दर्शन और विज्ञान को भी यूरोप तक पहुँचाया । गणित की 'शून्य' की संकल्पना भारत का विश्व को दिया हुआ एक वरदान ही है । अरब लोगों ने इस संकल्पना का परिचय पश्चिमी यूरोप से कराया ।

११.२ भारत और एशिया महाद्वीप के अन्य देश

एशिया के अनेक देशों पर प्राचीन भारतीय संस्कृति का विशेष रूप से प्रभाव पड़ा ।

श्रीलंका : बौद्ध धर्म का प्रसार करने के लिए सम्राट अशोक ने अपने बेटे महेंद्र तथा अपनी बेटी

सिगिरिया गुफाओं में भित्तिचित्र

संघमित्रा को श्रीलंका भेजा था । इन दोनों के नामों का उल्लेख श्रीलंका के बौद्ध ग्रंथ 'महावंस' में मिलता है । संघमित्रा अपने साथ बोधिवृक्ष की टहनी ले गई थी । श्रीलंका के अनुराधपुर में बोधिवृक्षँ है और वहाँ की परंपरा के अनुसार यह माना जाता है कि वह बोधिवृक्ष इसी टहनी से बड़ा हुआ है ।

श्रीलंका के मोती तथा अन्य मूल्यवान वस्तुओं की भारत में बड़ी मात्रा में माँग थी । वहाँ के सिगिरिया नामक स्थान पर ईसा पाँचवीं शताब्दी में कश्यप राजा ने गुफाएँ खुदवाई थीं । उन गुफाओं के भित्तिचित्रों की शैली अजिंठा की चित्रशैली के साथ साम्य दर्शाती है । श्रीलंका के 'महावंस' और 'दीपवंस' ग्रंथ भारत और श्रीलंका के बीच के पारस्परिक संबंधों की जानकारी देते हैं । ये ग्रंथ पाली भाषा में लिखे गए हैं ।

चीन और अन्य देश : प्राचीन समय से भारत और चीन के बीच व्यापारिक और सांस्कृतिक संबंध प्रस्थापित हुए थे । सम्राट हर्षवर्धन ने चीन के दरबार में अपना राजदूत भेजा था । चीन में तैयार होनेवाले रेशमी वस्त्र को भारत में 'चीनांशुक' कहते थे । भारत में चीनांशुक की बड़ी माँग थी । प्राचीन भारत के व्यापारी यह चीनांशुक पश्चिमी देशों में भेजते थे । यह व्यापार सड़क मार्ग से होता है । इस मार्ग को 'रेशम मार्ग' भी कहते हैं । भारत के कुछ प्राचीन स्थान इस रेशम मार्ग से जोड़े गए थे । उनमें महाराष्ट्र के मुंबई समीप का नाला-सोपारा एक स्थान था । भारत में बौद्ध भिक्खु फाहियान और युआन श्वांग भी रेशम मार्ग से ही आए थे ।

ई. स. प्रथम शताब्दी का चीनी सम्राट 'मिंग' के आमंत्रण पर बौद्ध भिक्खु धर्मरक्षक और कश्यपमातंग चीन गए थे । उन्होंने अनेक भारतीय बौद्ध ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद किया । उसके पश्चात चीन में बौद्ध धर्म के प्रसार हेतु प्रोत्साहन मिला । बौद्ध धर्म जापान, कोरिया और विएतनाम देशों में भी पहुँचा ।

दक्षिण- पूर्व एशिया के देश : कंबोडिया देश के प्राचीन राज्य 'फुनान' की स्थापना ई. स. प्रथम शताब्दी में हुई । चीनी परंपरा के आधार पर यह जानकारी प्राप्त होती है कि फुनान की स्थापना कौंडिण्य नामक भारतीय ने की । फुनान के निवासियों को संस्कृत भाषा का ज्ञान था। उस कालखंड का एक उकेरा हुआ शिलालेख उपलब्ध है । यह शिलालेख संस्कृत में है । दक्षिण-पूर्व एशिया के अन्य देशों में भी भारतीय वंश के लोगों के छोटे राज्य उदित हुए थे । इन राज्यों के कारण भारतीय संस्कृति का प्रसार दक्षिण-पूर्व एशिया में होता रहा ।

दक्षिण-पूर्व एशिया की कला और उसके सांस्कृतिक जीवन पर भारतीय संस्कृति का प्रभाव दिखाई देता है । इंडोनेशिया में आज भी रामायण और महाभारत की कथाओं पर आधारित नृत्य एवं नाट्य लोकप्रिय हैं । दक्षिण-पूर्व एशियाई राज्यों में भारतीय संस्कृति का प्रभाव उत्तरोत्तर बढ़ता गया । प्राचीन समय में बौद्ध धर्म म्यानमार, थाईलैंड, इंडोनेशिया आदि देशों में पहुँच गया । कालांतर में शिव और विष्णु के मंदिरों का भी निर्माण हुआ ।

इस वर्ष हमने ईसा पूर्व ३००० से ई. स. आठवीं शताब्दी तक के भारतीय इतिहास की जानकारी प्राप्त की । अगले वर्ष हम ई. स. नौवीं शताब्दी से अठारहवीं शताब्दी तक के इतिहास का अध्ययन करेंगे । ई. स. नौवीं शताब्दी से अठारहवीं शताब्दी के कालखंड के इतिहास को 'मध्ययुगीन इतिहास' कहते हैं ।

स्वाध्याय

१. पहचानो तो ।

(१) वह स्थान; जहाँ रोमन बनावट की वस्तुएँ पाई गईं।

(२) कुषाण कार्यकाल में भारत में एक नई कलाशैली का उदय हुआ; वह शैली ।

(३) महावंस और दीपवंस ग्रंथों की भाषा

(४) प्राचीन समय के वे देश; जहाँ बौद्‌ध धर्म का प्रसार हुआ ।

२. विचार करो और लिखो :

(१) दक्षिण-पूर्व एशिया पर भारतीय संस्कृति का प्रभाव दिखाई देता है ।

(२) चीन में बौद्‌ध धर्म के प्रसार हेतु प्रोत्साहन मिला ।

३. तुम क्या करोगे ?

तुम्हारी पसंद की रुचि को प्रोत्साहन मिला तो तुम क्या करोगे ?

४. चित्र का वर्णन करो :

हमारे पाठ में दिए गए अफगानिस्तान के हड्डा में स्तूप पर अंकित गांधार शैली के शिल्पों का निरीक्षण करो और चित्र का वर्णन करो ।

५. अधिक जानकारी प्राप्त करो :

(१) गांधार शैली (२) रेशम मार्ग

६. पाठ में उल्लिखित दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों को मानचित्र प्रारूप में दर्शाओ ।

उपक्रम :

जो कला तुम्हें अच्छी लगी होगी; उस कला के विषय में जानकारी प्राप्त करो और उसको कक्षा में प्रस्तुत करो ।

* * *

6ZGL8G